विद्या -भवन ,बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

नीतू कुमारी, वर्ग-पंचम, विषय -हिंदी,

दिनांक-16-06-2021 एन.सी.ईआर.टी पर आधारित

पाठ-6 अमूल्य उपहार

सुप्रभात बच्चों,

आज की कक्षा में आपको अमूल्य उपहार का शेष भाग अध्ययन करना है-

बालक -	(सिर हिलाते हुए) मुझे नहीं पता।
पिंटू -	क्या नाम है तुम्हारा?
बालक -	मेरा नाम है घसीटाराम। घसीटू, घसीटू कहते हैं लोग मुझे।
पिंटू -	अच्छा यह बताओ, तुम क्या करते हो घसीटाराम?
बालक -	मैं घर-घर जाकर अखबारों की रद्दी खरीदता हूँ।
पिंटू -	रद्दी का क्या करते हो तुम?
बालक -	मैं और मेरी माँ मिलकर थैलियाँ बनाते हैं। फिर उन्हें लाला के यहाँ बेच देते हैं।
पिंटू -	तो क्या इसी से तुम्हारा गुजारा चलता है, घसीटाराम?
बालक -	हाँ जी।
पिंटू -	स्कूल नहीं जाते हो तुम?
बालक -	स्कूल तो तुम जैसे बच्चों के लिए ही है पिंटू जी। हमारे लिए नहीं है।
पिंटू -	गलत बात! (हाथ बढ़ाते हुए) अच्छा, तुम मुझसे दोस्ती करोगे, घसीटाराम?
बालक -	दोस्ती तो बराबर वालो में होती है पिंटू भाई। कहाँ मैं और कहाँ तुम?
पिंटू -	मैं और तुम बराबर तो हैं। तुम भी बारह साल के, मैं भी बारह साल का। (वह हँसता है) आओ, मेरे साथ आओ मैं तुम्हें अपने जन्मदिन की मिठाई खिलाऊँगा।
बालक -	नहीं पिंटू भाई, ऐसे नहीं।
पिंटू -	ऐसे क्यों नहीं?
बालक -	सब लोगों ने तुम्हें कोई-न-कोई उपहार दिया है। मैंने तो कुछ दिया ही नहीं। मैं कैसे खाऊँ?
पिंटू -	बड़े अभिमानी हो। चलो, तुम भी कोई उपहार दे दो न?

(बालक तेज-तेज कदमों से जाता हुआ)

पापा - (पिंटू की ओर आते हुए) क्यों पिंटू, किससे बातें हो रही थी, बाहर सड़क पर?

पिंटू - मेरा एक नया दोस्त बना है पापा, घसीटाराम।

पापा - (खीजते हुए) वह गंदा लड़का, रद्दी वाला।

पिंटू - वह गंदा लड़का नहीं है पापा, बहुत सीधा-सच्चा है।

पापा - मूर्खों वाली बात मत करो। ऐसे गंदे बच्चों से नहीं मिला करते।

मम्मी - हाँ, हाँ, पिंटू, तुम्हारे पापा ठीक कह रहे हैं। तुम पढ़ने-लिखने वाले बच्चे हो। तुम्हारा और उसका साथ?

पिंटू - पर मम्मी, मैंने तो उससे वायदा किया है कि मैं उसे अपने जन्मदिन की बहुत सारी मिठाई दूँगा।

पापा - ठीक है, ठीक है। मिठाई तुम उसे दे देना, पर वह तो चला गया।

पिंटू - चला नहीं गया पापा! वह तो उपहार लेने गया है मुझे देने के लिए।

मम्मी - उपहार लेने गया है?

पिंटू - हाँ मम्मी! वह कहता था, मैं तब तक मिठाई नहीं खाऊँगा जब तक उपहार नहीं दूँगा। मुझे सभी ने उपहार दिए हैं न?

पापा - तो क्या तुम उस गरीब बच्चे से उपहार लोगे?

पिंटू - इसमें बुरा क्या है पापा?

मम्मी - तुम्हें इसमें कुछ भी बुरा नहीं लगता है, पिंटू?

पिंटू - नहीं मम्मी।

मम्मी - ओफ्फ! तुम्हें क्या हो गया है, बेटे !

पापा - अच्छा भाई, अब तकरार बंद करो। वह आएगा तुम्हारा नया मित्र घसीटाराम तो तुम उसे डटकर मिठाई खिलाना, पर उससे कोई उपहार आदि मत लेना, समझे?

पिंटू - वह कुछ लाएगा तो मैं कैसे इनकार करूँगा, पापा?

मम्मी - इनकार करने में कौन-सी मेहनत करनी पड़ेगी, बेटे?

पिंटू - जितने लोग उपहार लाए थे मम्मी, उनमें से किसी को मैंने, आपने या पापा ने मना किया है क्या? फि उसे क्यों मना करूँगा मैं।

मम्मी - उनकी बात और थी बेटे, इस लड़के की बात कुछ और है।

(घसीटाराम तेज-तेज कदमों से पिंटू के घर की ओर आता हुआ दिखाई देता है।)

घसीटाराम - लो भाई पिंटू, मैं तुम्हारे लिए एक छोटा-सा तोहफा लाया हूँ।

पिंटू - (हाथ में एक छोटे से पौधे को देखते हुए) यह क्या लाए हो?

घसीटाराम - यह छोटा-सा आम का पौधा है। तुम कुछ नहीं करोगे पिंटू भाई, मैं इसे तुम्हारे आँगन में लगाए देता देखना यह धीरे-धीरे बढ़ जाएगा।

पिंटू - कैसे लगाओगे इसे?

घसीटाराम - मैं खुरपी भी लाया हूँ पिंटू, कहीं तुम्हारे घर न हो। बड़े घरों में बाजा होता है, खुरपी नहीं होती है।

(घसीटाराम पौधा लगाकर हाथ झाड़ता है और नल से पानी लेकर हाथ धो लेता है।)

पिंटू - (भीतर से मिठाई का डिब्बा लाते हुए) लो घसीटाराम, मिठाई खाओ।

घसीटाराम - (मिठाई का डिब्बा लेते हुए) तुम इस पौधे की चिंता मत करना पिंटू भाई। मैं रोज या दूसरे दिन इसे पानी दे जाया करूँगा। पाँच साल में यह पूरा पेड़ बन जाएगा, देखना।

(घसीटाराम चला जाता है। मम्मी-पापा वहीं खड़े बतिया रहे हैं।)

पापा - मन भी किस मूर्ख पर आया है, अपने पिंटू बेटे का!

मम्मी - कुछ नहीं जुड़ा तो आम का पौधा ही उखाड़ लाया घर से!

पिंटू - पर मम्मी, घसीटाराम का उपहार सबसे बढ़िया है, यह तो आप मानेंगे।

मम्मी - वह कैसे? इतने अच्छे-अच्छे कपड़े, पेन, शोपीस सब लोग लाए, वे बढ़िया नहीं हैं? यह आम का पौ बढ़िया है तुम्हारे लिए।

पिंटू - हाँ मम्मी, ये सब चीजें तो नष्ट हो जाएँगी, आज नहीं तो कल। पर यह पौधा तो कभी समाप्त नहीं होगा

पापा - समाप्त नहीं होगा?

पिंटू - हाँ पापा! पाँच वर्ष में यह पूरा पेड़ बन जाएगा। फिर उस पर फल आएँगे, मीठे-मीठे। घसीटाराम उपहार तो जीवन भर चलेगा। है न यह अमूल्य उपहार?

पापा - अरे मूरख! कब दादा लेगा, कब पोता बरतेगा?

पिंटू - पोता नहीं पापा! मैं और आप भी बरतेंगे। इस पेड़ के फल मैं और आप भी खाएँगे।

(पिंटू पौधे पर पानी छिड़कता है)

गृह कार्य—

दी ,गई अध्ययन -सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें और कठिन शब्द चुनकर लिखें।